RNI No - RAJHIN/2003/9899, Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2018-2020
Published on 01 August 2020, Posted at RMS, Sri Ganganagar on 2nd or 3rd August 2020

मासिक पत्रिका

अजायब ✿ बानी

वर्ष–अठारहवां | अंक–चौथा | अगस्त–2020

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से...
मैं तो कृपाल से बिछुड़ के रोई रे — 5

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
निश्चित मकसद — 17

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से...
सच्चा उपदेश — 25

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले
अमृत वेला — 29

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से...
सन्त कल्लरपट्ट — 31

कृपाल गुरु आजा संगत पुकार दी — 33

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** ने पोलिकम ऑफसेट, नारायणा, फेस–1, नई दिल्ली–110 028 से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।
99 50 55 66 71 80 79 08 46 01

विशेष सलाहकार – **गुरमेल सिंह नौरिया**
96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

उप संपादक – **नन्दनी**
सहयोग – **परमजीत सिंह**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 221 Website : www.ajaibbani.org

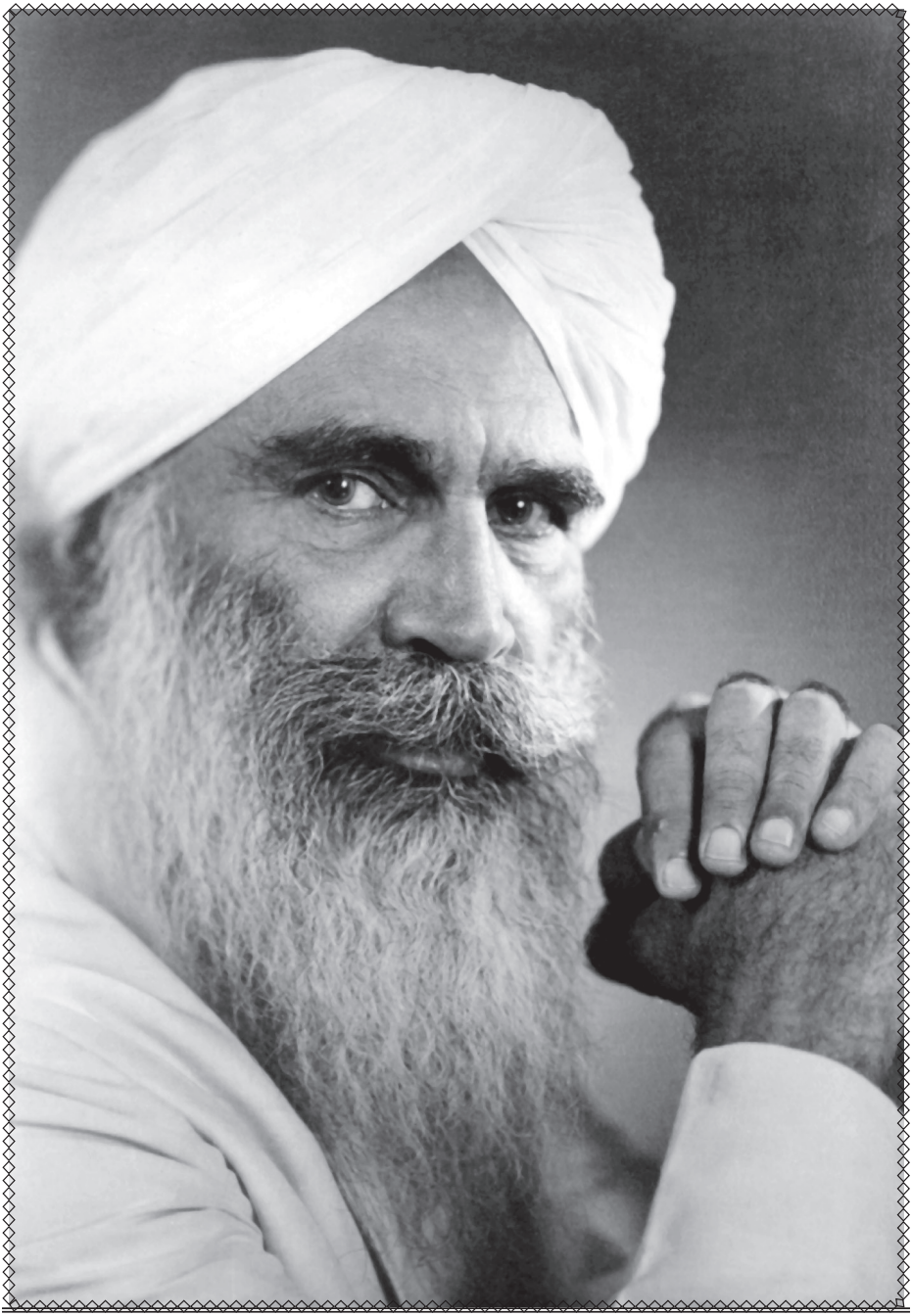

कैलिफोर्निया

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से...

मैं तो कृपाल से बिछुड़ के रोई रे

मैं दयालु परमात्मा का धन्यवाद करता हूँ जिसने अपना असली घर सच्चखंड और अपने असली रूप शब्द को छोड़ा, आप इंसानी जामा धारण करके हमारे बीच में रहे। आपके माता–पिता ने आपका प्यारा नाम कृपाल रखा। कृपाल का अर्थ है दया करने वाला। कृपाल ने अपनी दया की वर्षा की और हर व्यक्ति को प्यार का संदेश दिया।

आपने हमें सिखाया कि हम सब परमात्मा के बच्चे हैं। हम सब एक ही आसमान के नीचे और एक ही धरती पर रहते हैं। हम सबको उसी परमात्मा ने पैदा किया है इसलिए हमें हर एक के साथ प्यार करना चाहिए। हुजूर महाराज कृपाल ने अपनी दया की वर्षा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

महाराज कृपाल सदा कहा करते थे, ''अब वस्तु देने वाला आ गया है, इसे ले लें।'' जो आपकी दया प्राप्त करने के लिए तैयार थे वे ही उस महान आत्मा को समझ सके और उन्होंने अपने बर्तन के मुताबिक ही दया प्राप्त की। हम यह भी कह सकते हैं कि कृपाल आँख वाला था और हम आपके सामने अंधे थे। आपने खुद ही हमें बुलाया और अपनी अंगुली पकड़वाई तभी हम आपको पहचान सके।

आपकी जुबान पर सदा प्यार का शब्द था और आपने जो कुछ बोला वह प्यार था। आप संसार के सभी व्यक्तियों को प्यार द्वारा ही एक साथ एकत्रित करना चाहते थे। आप हर व्यक्ति को प्यार से जोड़ने में खुश थे, चाहे वह किसी भी देश या धर्म का था।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''हम इस संसार में परमात्मा की भक्ति करने के लिए आए हैं।'' आपने हमसे सदा परमात्मा की भक्ति

करवाई। हम परमात्मा की भक्ति तभी कर सकते हैं अगर हम परमात्मा की रची सृष्टि से प्यार करें। हम परमात्मा की भक्ति करने का दावा तो करते हैं लेकिन हमें परमात्मा से प्यार करने की बजाय उसकी रची सृष्टि से अधिक प्यार करने की जरूरत है क्योंकि परमात्मा ने सारी सृष्टि को पैदा किया है। जब तक हम दूसरों के प्रति ईष्या द्वेष नहीं छोड़ते तब तक हम परमात्मा की भक्ति नहीं कर सकते।

दयालु कृपाल प्यार के महा सागर थे। जब तक हम किसी से प्यार नहीं करते तब तक हम परमात्मा की भक्ति नहीं कर सकते। हमें आपकी शिक्षाओं पर अमल करना चाहिए, आपकी आज्ञा का पालन करना चाहिए।

आज वह दिन है जब सर्वशक्तिमान कृपाल ने अपनी सांसारिक यात्रा को पूरा किया, आप वापिस अपने असली घर गए। हमें सुख–दुःख तभी तक होता है जब तक हम इस शरीर में हैं, केवल यह शरीर ही थकता है। अब आपने शरीर छोड़ दिया है और आप 'शब्द' में लीन हो चुके हैं। अब आपको कोई दुःख नहीं कोई थकान नहीं। बेशक हम लोगों ने आप पर अपने कर्मों का भारी बोझ डाला। हमने आपको बहुत दर्द और तकलीफे दी। अब आपको कोई दर्द और तकलीफ नहीं क्योंकि आप देह में नहीं हैं, आप शब्द में लीन हो चुके हैं, शब्द को कोई तकलीफ नहीं होती।

जो लोग यह कहते हैं कि अब कृपाल थक गया है वे ये नहीं जानते कि कृपाल कहाँ गया है? कृपाल उस घर गया है जहाँ थकावट नहीं होती। अब कृपाल शब्द बन चुका है। क्या शब्द को कोई थकावट हो सकती है? शब्द जब से उत्पन्न हुआ है सदा ही शक्तिशाली व आनन्दपूर्ण रहा है।

सतगुरु मेरा सदा सदा न आए न जाए।
वह अविनाशी पुरुष है सब में रहा समाए।।

प्यारेयो! मैं सदा कहता आया हूँ कि मेरे परम दयालु कृपाल प्यार का महा सागर थे और मैं प्यार का पुजारी रहा हूँ। आपने मुझे प्यार ही दिया

क्योंकि मैं बचपन से ही प्यार के लिए तरस रहा था और जब आप मुझे मिले तो आपने मुझे प्यार ही दिया। मैं अक्सर बताया करता हूँ कि मैं प्यार के लिए तड़प रहा था, प्यार के लिए प्यासा था। मैं जिंदगी भर आपकी तलाश करता रहा। आप आए तो मेरी तलाश पूर्ण हो गई। जब समय आया परम दयालु कृपाल स्वयं चलकर मेरे घर आए और मेरी प्यास बुझाई। आपने मुझे प्यार का पानी दिया। मुझे आप पर पूरा भरोसा था, मैंने आपसे कोई सवाल नहीं किया। मैं प्यार का पानी चाहता था आपके पास प्यार का पानी था, आपने प्यार का पानी देकर मेरी प्यास बुझाई।

जो लोग संगीत नहीं सीखना चाहते, संगीत का बादशाह तानसेन चाहे उनके जूते भी झाड़े वे लोग उसकी कद्र नहीं करेंगे। जो संगीत की कला सीखना चाहते हैं वे तानसेन के पास जाकर जूते झाड़ेंगे क्योंकि उनमें संगीत की कला सीखने की तड़प है।

जैसे पिता अपने बच्चों से प्यार करता है वैसे ही मेरे सतगुरु ने मुझसे प्यार किया। आप मुझे अपनी गोद में बिठाया करते थे, अपने साथ खाना खिलाया करते थे। मैंने आपसे जो प्यार प्राप्त किया उस प्यार का वर्णन मैं इस संसार को नहीं बता सकता।

मेरे जवान होते ही मेरे माता–पिता ने मुझ पर शादी करने का दबाव डाला लेकिन मेरा शादी करने का कोई इरादा नहीं था। मैं बचपन से ही जानता था कि मेरे अंदर कोई ताकत बैठी हुई है जो मेरे सामने बड़ी समस्याएं और भ्रम पैदा कर रही है। मैंने सोचा अगर मैंने अपने अंदर बैठी इस ताकत को काबू नहीं किया और शादी करवा ली तो मुझे एक और ताकत का मुकाबला करना पड़ेगा।

जब मैं घर छोड़कर परमात्मा की खोज के लिए घर से चल पड़ा तब मेरी माता मेरे साथ तीन मील तक चलती रही। मेरी माता ने कहा, ''प्यारे बेटे! तुम शादी करवा लो उसके बाद मैं तुम्हें भक्ति करने से नहीं रोकूँगी।''

मैंने अपनी माता से कहा, ''अगर मैंने शादी करवा ली तो समझाने वाला मेरे साथ ही होगा अगर मेरी तकदीर में शादी लिखी होगी तो वह खुद ही चलकर मेरे पास आ जाएगा।''

महाराज जी कहा करते थे, ''भूखे को रोटी और प्यासे को पानी देना कुदरत का उसूल है।'' भारत में जब दूल्हा, दुल्हन से शादी करने जाता है तो वह दुल्हन के लिए गहने, कपड़े आदि लेकर जाता है। इसी तरह जब सतगुरु कृपाल मुझसे शादी करने आए तब आप मेरे लिए अंगूठी और कपड़े लाए। आपने भारतीय परंपरा के अनुसार सब रीति–रिवाज किए।

जब महाराज कृपाल ने चोला छोड़ा तब इस गरीब फकीर की क्या हालत हुई? मैं आपको इस भजन में बताऊँगा कि जब गुरु चोला छोड़ देता है तब सेवक देह रूपी दर्शनों का लाभ प्राप्त नहीं कर सकता।

इस दिन आपने सांसारिक यात्रा पूरी की, अब आप वापिस अपने निजघर जा चुके हैं और सुखों के मंडल में रह रहे हैं। हमने आपकी शिक्षा को याद रखना है, हमने वही करना है जो आप हमसे करवाना चाहते हैं। आपने हमें बताया कि अपने अंदर प्यार पैदा करें इसलिए हमने एक–दूसरे के साथ प्यार करना है; हमने सतगुरु कृपाल से प्यार करना है। आपने हमें नामदान दिया है। हमारा फर्ज बनता है कि हम लगातार सिमरन करें और अपने ध्यान को बाहर की चीजों से हटाएं। अपने फैले ख्याल को अपनी आँखों के पीछे लाएं यह वह स्थान है जहाँ आप हमारा इंतजार कर रहे हैं।

यह भजन तड़पती और दु:खी आत्मा ने गाया है। जब सतगुरु ने चोला छोड़ा उस समय इस दु:खी आत्मा को यह भी होश नहीं था कि जूते कहाँ हैं, पायजामा पहना हुआ है या नहीं। उस समय मुझे अपने शरीर की भी होश नहीं थी। उस समय मैं गाँव किल्लेयाँवाली चला गया वहाँ मुझे कोई नहीं जानता था, मैंने वह दु:ख का समय वहाँ बिताया। मैं पिछले साल वहाँ गया तो उन लोगों को मेरे बारे में जानकारी हुई। उन्होंने मुझे सतसंग

करने के लिए कहा। वहाँ के लोगों ने मुझसे कहा कि हम आप पर निर्भर हैं। चाहे आप हमें नामदान न दें फिर भी हम आपको अपना गुरु मानते हैं। जब हजरत बाहु के गुरु ने चोला छोड़ा उस समय हजरत बाहु ने यही कहा:

ऐह दुःख हमेशा रहसी बाहु, मैं रोंदड़ी ही मर जावां हू।

जब गुरु नानकदेव जी ने चोला छोड़ा उस समय आपके शिष्य अंगददेव जी ने भी यही कहा:

जिस प्यारे सिउ नेहु, तिस अग्गे मर चलीऐ।
धृग जीवण संसार, ताके पाछै जीवणां।।

मैं अक्सर कहा करता हूँ:

मेरे जिड्डा होवे दुःखी, ओसनूं सुणावां दुःख।
सदा सुखी रहे जो ओहनूं दुःख दी पछाण की।
खुसरे की जाणदें ने मैथुनां दे स्वाद ताईं।
हाफिज बेचारयां ने पढ़ना कुरान की।
तेरे नाल बीतदी है तूं ही जाणदा अजायब सिंह।
संसार छड्ड देवे गुरु सेवक दा ऐतो उत्ते मर जाण की।

प्यारेयो! जो गुरु के वियोग के दुःख को महसूस करते हैं और उस वियोग में तड़प रहे होते हैं वे किसी के प्रति ईष्या या द्वेष नहीं रखते क्योंकि उनके पास इसके लिए समय ही नहीं होता। मैंने बचपन में एक भजन लिखा था जिसकी आखिरी लाईने थी:

ईक न लिखीं मेरे सतगुरु दा बिछोड़ा।
भावे छुट जाए सारा संसार लिख दे।।

ऐ तकदीर लिखने वाले! चाहे मुझे सारा संसार छोड़ना पड़े लेकिन मेरी किस्मत में गुरु का बिछोड़ा न लिखना। हमें सतगुरु की याद में प्यार के आँसू बहाने चाहिए और प्यार का सबक सीखना चाहिए।

जब सेवक का प्यारा गुरु संसार छोड़ देता है तब सेवक के पास रोने के अलावा कोई चारा नहीं होता। चाहे कोई सेवक को दुनिया का राजपाठ

भी देना चाहे तो वह उस तरफ ध्यान नहीं देता। जिस तरह घड़ी की सुईयाँ घूमकर वापिस उसी जगह आ जाती हैं उसी तरह सेवक सदा सतगुरु की तरफ घूमता रहता है:

मैं तो कृपाल से बिछुड़ के रोई रे,

1. पिया से बिछुड़ के इस जग आई, दर दर भटकी ठोकर खाई, (**2**)
बात ना पूछे कोई रे, मैं तो कृपाल से.....

2. बिन पिया के मैं तड़प रही हूँ, दर्शन को मैं तरस रही हूँ (**2**)
बैरन दुनियां होई रे, मैं तो कृपाल से.....

3. आऊं जाऊं मैं दु:ख पाऊं, विछुड़ पिया से मैं पछताऊं (**2**)
काल देश में खोई रे, मैं तो कृपाल से.....

4. संग बसे मेरे मैं क्या जानूं, मैं पगली पिर ना पहचानूं (**2**)
कृपाल से बात ना होई रे, मैं तो कृपाल से.....

5. कोई ना जाने देश पराया, तोर दित्ता मुड़ लैण ना आया (**2**)
ना जीवां ना मोई रे, मैं तो कृपाल से.....

6. भुल्ल गयों वे तूं बेदर्दा, विछड़ा तैथों दिल नहीं करदा (**2**)
कृपाल बगैर कित्थे ढोई रे, मैं तो कृपाल से.....

7. राह भुल्ल गई मैं किस राह आंवां, आ के लै चल तरले पावां (**2**)
मुश्किल डाडी होई रे, मैं तो कृपाल से.....

8. कृपा करो कृपाल सुनो रे, दाते दीन दयाल सुनो रे (**2**)
मैं दु:खयारी रोई रे, मैं तो कृपाल से.....

9. मैं पापण नूं गल नाल ला लै, अपने बेड़े विच बिठा लै (**2**)
'अजायब' कृपाल दी होई रे, मैं तो कृपाल से.....

सतगुरु के चोला छोड़ने के बाद मैं जहाँ जाकर रहा, वहाँ मैं किसी के घर खाना खाने नहीं जाता था। आप जानते हैं कि शरीर को खाने की भी

जरुरत होती है। वहाँ मेरी देखभाल करने वाला कोई नहीं था। लगातार रोने से मेरी एक आँख खराब हो गई और मुझे आँख का ऑपरेशन करवाना पड़ा।

उसके बाद मैं संगरिया में नहरी विभाग के विश्राम गृह में जाकर रहने लगा। महाराज जी के चोला छोड़ने के बाद मैं बिना बताए ही चला आया था। किसी को अंदाजा नहीं था कि मैं कहाँ हूँ? पाठी जी को तड़प उठी, वह मेरी तलाश में दो जोड़ी कपड़े लेकर इस इरादे से घर से चल पड़े कि मुझे ढूंढकर ही रहेंगे। पाठी जी ने संगरिया पहुँचकर नहरी विभाग के अफसरो से मेरे बारे में पूछा। मेरे बारे में एक अफसर की पत्नी ही जानती थी।

वहाँ मैंने यह कह रखा था कि मेरे बारे में किसी को न बताया जाए क्योंकि मैं इस संसार में बाहर नहीं आना चाहता था, मुझे इस संसार से कोई लेना–देना नहीं था। हालाँकि उस अफसर की पत्नी मेरे बारे में जानती थी लेकिन उसने पाठी जी को कुछ नहीं बताया। जब उस अफसर ने पाठी जी को रोते हुए देखा तो उसने अपनी पत्नी से कहा कि तुमने इन्हें क्यों नहीं बताया कि सन्त जी हमारे विश्राम गृह में हैं। तब अफसर की पत्नी ने पाठी जी को बताया और पाठी जी मेरे पास आए।

मैं सारा दिन विश्राम गृह के अंदर रहता था और रात होने पर बाहर आया करता था। मैं वहाँ के एक परिवार के घर जाया करता था। जब पाठी जी विश्राम गृह के पास आए तो पाठी जी ने बच्चों से मेरे बारे में पूछा, ''क्या यहाँ कोई रहता है?'' उन बच्चों ने जवाब दिया कि यहाँ एक सन्त जी रहते हैं वह शाम को ही बाहर आते हैं। पाठी जी ने शाम होने का इंतजार किया। मैंने पाठी जी से उनके आने का कारण पूछा तो उन्होंने कुछ कहने की बजाय रोना शुरू कर दिया। मेरा भी दिल भर आया, मैं अपने आपको नहीं रोक सका; मैं 77 आर.बी. आ गया।

उसके बाद मैंने निश्चय किया कि मैं इस संसार में बाहर नहीं आऊंगा, मुझे इस संसार से कुछ लेना–देना नहीं था। मैंने सोचा कि मैं सदा जमीन

के नीचे बैठकर अभ्यास करूंगा और अपने गुरु की याद में रोकर जीवन बिताऊंगा इसलिए मैंने लोगों को अपना रहने का स्थान बताने से मना कर दिया ताकि कोई भी मुझसे मिलने न आ सके।

महाराज जी की प्रेरणा से रसल प्रकिन्स मुझसे मिलने आया उसने मुझे बाहर इस संसार में निकाला। वह जब मुझसे मिलने आ रहा था और वह मेरे घर से 50-60 मील की दूरी पर था तब लोगों ने उसे रोक दिया कि सन्त जी किसी से नहीं मिलते। वह अपने अंदर प्यार लेकर आया था मैंने भी उसके अंदर प्यार देखा और मैं उससे मिला। मैंने संसार में बाहर न आने का इरादा किया हुआ था लेकिन प्रेमियों के प्यार ने मुझे बाहर खींच लिया। उसके बाद कई प्रेमी मुझसे मिलने आए और यहाँ भी मुझे आपके प्यार ने खींच लिया।

मैं सदा राजस्थान में ही रहा। मैंने अपनी जिंदगी का अधिकतर हिस्सा जमीन के नीचे अभ्यास में ही बिताया है। मुझे यूरोप, अफ्रीका या अमेरिका में कोई नहीं जानता था। भारत में भी ज्यादा लोग मुझे नहीं जानते थे क्योंकि मैं कभी मुम्बई या दिल्ली नहीं गया था।

मैं जब बाबा बिशनदास जी से मिला तो मैंने उनके कहे अनुसार अठारह साल जमीन के नीचे बैठकर अभ्यास किया। उसके बाद महाराज जी मेरे घर आए। उन्होंने मुझ पर अपनी दया की भरपूर वर्षा की। महाराज जी ने मुझे कहीं न जाकर केवल भजन करने के लिए कहा। जब कभी मुझे दर्शनों की आवश्यकता होती आप स्वयं चलकर दर्शन देने के लिए आते। मैंने अपनी जिंदगी में अभ्यास किया है इसलिए मैं जानता हूँ कि भजन–अभ्यास करना कितना कठिन है और हमें कितनी तकलीफ उठानी पड़ती है।

पहले समय में राजा–महाराजा अपराधियों को सजा देने के लिए उनके हाथ–पैर बँधवा देते फिर जंगली कुत्तों को छोड़ देते। कुत्ते अपराधियों के शरीर को काटते थे इस तरह की तकलीफें सहन करके अपराधी मर जाते

थे। आप जब भजन करेंगे तो आपको बहुत दर्द सहन करना पड़ेगा क्योंकि जब हमारी आत्मा एक चक्र को पार करती है तो हम काफी दर्द महसूस करते हैं, जब आत्मा हृदय चक्र को पार कर जाती है तो उस समय ऐसा दर्द महसूस होता है जैसा कि मृत्यु के समय होता है।

सतगुरु ने मुझे वचन दिया था, ''तुम भजन करो मैं स्वयं तुमसे मिलने के लिए आऊंगा।'' गुरु को अपने शिष्य से मिलने के लिए किसी से इजाजत लेने की जरूरत नहीं होती। यह गुरु और शिष्य के बीच की बात होती है। आप अपने वायदे के पक्के रहे, सदा मुझसे मिलने आए।

महाराज कृपाल की लेखनियों में ऐसे लोगों का जिक्र आता है जो यह कहते हैं कि हमने गुरु के साथ बहुत समय बिताया है और बहुत सी पुस्तकें लिखी हैं। आप अक्सर कहा करते थे, ''मेरे साथ रहने वाले लोग मेरा खून चूसते हैं।''

आप महाराज सावन सिंह जी की रचनाओं में पढ़ सकते हैं कि एक बार किसी आदमी ने महाराज सावन सिंह जी से पूछा, ''क्या मैं आपके आश्रम में रह सकता हूँ?'' महाराज सावन सिंह जी ने कहा, ''आप जब तक दसवाँ द्वार पार न कर लें तब तक आपको आश्रम में रहने के बारे में सोचना भी नहीं चाहिए क्योंकि दसवें द्वार में पहुँचकर ही आप गुरु की शान के बारे में जान सकते हैं।'' जब आप आश्रम में आकर रहने लग जाते हैं तब आपके अंदर से गुरु के दर्शनों की भूख चली जाती है। गुरु कभी आश्रम में रहने वाले लोगों पर खुश होते हैं, उनके साथ प्यार का व्यवहार करते हैं लेकिन कभी–कभी उन लोगों को डाँटना भी पड़ता है।

आश्रम में रहने से कई कमियाँ आ जाती हैं। आश्रम में रहने वाले लोगों के अंदर घमंड आ जाता है। आश्रम में रहकर आप रोजी–रोटी नहीं कमा सकते, आप दूसरों के पैसों पर निर्भर हो जाते हैं जो आपको किसी न किसी रूप में चुकाना पड़ता है। आप आश्रम में रहकर सेवा करते हैं तो

लोग आपकी प्रशंसा करते हैं। लोग आपके गुण लेकर आपके पास क्रोध, अहंकार और नफरत छोड़ जाते हैं। आश्रम में रहने से आपके अंदर साधु बनने का अहंकार हो जाएगा। गृहस्थी माथा टेककर आपको लूट लेंगे। गुरु के लिए दूर या नजदीक का कोई फर्क नहीं पड़ता। कबीर साहब कहते हैं:

गुरु बसे बनारसी, शिष्य समुंद्र तीर।
ईक पल विसरे नाहीं जो गुण होए शरीर।।

गुरु लाखों मील दूर हो तो भी वह आपकी आत्मा को शब्द पर सवार करके अपने पास वापिस ला सकता है। आप एक पल में ही गुरु के पास जाकर वापिस आ सकते हैं।

मेरे बारे में लोगों को कैसे पता चला? यह केवल महाराज कृपाल के कहे गए वचनों के कारण ही हुआ। यह आपका वाक था, ''तुम्हारे अंदर से खुशबू आएगी और वह खुशबू सात समुंद्र पार चली जाएगी। अमेरिका और यूरोप के लोग तुम्हें हवाई जहाजों पर सैर करवाएंगे।''

उस समय किसी ने भी आपके वचनों पर विश्वास नहीं किया। एक आदमी ने तो यह भी कहा कि महाराज जी! आप कहते हैं कि लोग इन्हें हवाई जहाजों में सैर करवाएंगे लेकिन इन्हें तो कोई जीप में भी नहीं बिठाता। जब सन्त ऐसे वचन कहते हैं उस समय हम लोग उनके वचनों पर विश्वास नहीं करते। महाराज जी ने कहा, ''यह परमात्मा के दरबार का हुक्म था। आप विश्वास करें या न करें, ऐसा समय आएगा जब सब लोग इस पर विश्वास करेंगे।''

मेरे कहने का भाव यह है कि मैं इस विश्व यात्रा में गुरु के रूप में नहीं एक सेवादार के रूप में आया हूँ। मैं अपने प्यारे सतगुरु का सेवक हूँ। मैंने सदा ही अपने आपको संगत का छोटा सा सेवादार कहा है। मैं तो संगत के जूते साफ करने वाला हूँ, हो सकता है कि मैं पूरी तरह से जूते साफ करने भी न जानता हूँ।

जब रसल प्रकिन्स मेरे पास आया तब मैंने इससे कई वायदे करवाए। जिसमें से एक वायदा यह था कि यह सन्तबानी मासिक पत्रिका को सदा आलोचना व निन्दा से मुक्त रखेगा। जब से इस पत्रिका का प्रकाशन शुरु हुआ है आपने इसमें कभी भी किसी की आलोचना का शब्द नहीं पढ़ा होगा और भविष्य में भी यह पत्रिका इसी तरह रहेगी।

मैं रसल प्रकिन्स से बहुत खुश हूँ। कई समस्याओं के बाद भी रसल ने अपने वायदे को निभाया और पत्रिका को स्वच्छ और पवित्र रखा है। यह सच है अगर कोई दूसरों के प्रति ईष्या या द्वेष रखता है या किसी की निन्दा करता है तो सतगुरु उसके लिए दरवाजा नहीं खोलते। सन्तमत राजनीति नहीं है। सन्तमत वह मार्ग है जिस पर चलकर हमने अपनी जिंदगी में सुधार करना है, हमने अपने अवगुण और दूसरों के सद्गुणों को देखना है।

पिछले साल मैंने एक भजन लिखा है। प्यार हमें कायर नहीं बनाता जो सतगुरु से प्यार करते हैं वे सतुगरु पर अधिकार रखते हैं।

देजा तूं दर्श हुण लाईयां काहनूं देरियां,
दर तेरे ते आवांगे जी नारा शाह कृपाल दा लावांगे। (2)

1. देजा खां नजारा, आके सावन दे प्यारेया,
लब्भया ना सानूं, असीं बहुत तैनूं भालया, (2)
पार तेरे ही सहारे, हो जावांगे,
जी नारा शाह कृपाल का लावांगे,
देजा तू दर्श.....

2. तुर गयो साईयां साथों हो के काहनूं दूर जी,
केरां तां दिखा जा, ऐहो सावां जेहा नूर जी, (2)
तेरे बिना होर की, ईलाज बणावांगे,
जी नारा शाह कृपाल का लावांगे,
देजा तू दर्श.....

3. वांग मंसूर असीं, पक्के हो के खड़ांगे,
तेरे ही विछोड़े विच, सूली उत्ते चढ़ांगे, (2)
तेरे बिना ठोकरां, खावांगे,
जी नारा शाह कृपाल का लावांगे,
देजा तू दर्श.....

4. असीं गुनाहगार बाबा, तैनूं हां पुकार दे,
सारी संगत खड़ी है, विच मझधार दे, (2)
'अजायब' कृपाल बिना, ठोकरां खावांगे,
जी नारा शाह कृपाल का लावांगे,
देजा तू दर्श.....

हमें अपने प्यारे सतगुरु के संदेश का प्रसार करना चाहिए। हमें एक–दूसरे के साथ प्यार करना चाहिए। जब हम परमात्मा की भक्ति करते हैं तो हमें यह कहने की जरूरत नहीं कि मैं गुरु हूँ, सन्त हूँ या मुझे यह अनुभव हुआ है। कबीर साहब कहते हैं:

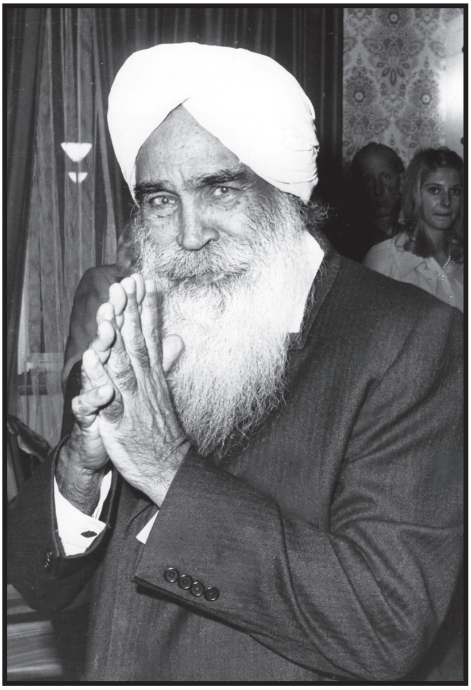

भक्ति करे पाताल में प्रकट होए आकाश।

जो परमात्मा में मिल चुके हैं वे कभी यह नहीं कहते कि वे परमात्मा से मिल चुके हैं। जो परमात्मा से कभी नहीं मिले वे सदा कहते हैं कि वे परमात्मा से मिल चुके हैं और परमात्मा के बारे में जानते हैं।

***

28 फरवरी 1971

महाराज कृपाल द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

निश्चित मकसद

एक प्रेमी: *भजन में बैठे हुए मेरा शरीर जकड़ जाता है, हम इस जकड़न को कैसे रोक सकते हैं?*

महाराज जी: दाता के दरवाजे पर बैठे हुए भिखारी को इंतजार करना चाहिए। यह एक दान है वह दे या न दे, यह उसकी मौज है। आप दरवाजे पर बैठे रहें और इंतजार करें देखें! जकड़न खत्म हो जाएगी। यह जकड़न एक व्यापार की तरह है कि आपने यह वस्तु नहीं दी वह वस्तु नहीं दी, आपका उस पर कोई दावा नहीं। जो भी दिया जाता है यह दया है। आपका काम बाहर से संपर्क तोड़कर केवल दरवाजे पर बैठकर इंतजार करना है।

एक प्रेमी: *हमें यह सीखना चाहिए?*

महाराज जी: इसमें सीखना क्या है, इसमें पढ़ाई–लिखाई का क्या काम है? जब दाता देता है यह उसकी रहमत है। आपने सिर्फ उसके दरवाजे तक आना है, जो उसके दरवाजे पर आते हैं उन्हें रहमत मिलती है।

आप जब दरवाजे पर बैठें तो आपका **निश्चित मकसद** होना चाहिए। अगर आप दरवाजे पर किसी निश्चित मकसद से बैठे हैं तो आपको सब कुछ मिलेगा। आपको सांसारिक वस्तुएं भी मिलेंगी और परमात्मा भी मिलेगा लेकिन आपका दृष्टिकोण निश्चित होना चाहिए।

आपने मजनूं का नाम सुना होगा, वह एक शहजादी लैला के ईश्क में था। किसी खास दिन लैला खैरात बाँटा करती थी। एक दिन मजनूं भी उस कतार में खड़ा हो गया। सभी लोग अपने–अपने कटोरे लेकर खड़े थे, लैला उनके कटोरे में कुछ न कुछ डालती और आगे बढ़ जाती। जब मजनूं की बारी आई तो लैला ने मजनूं के कटोरे को ठोका और वह कटोरा

टूट गया, मजनूं खुश हुआ। लैला ने कहा, ''ओह! बड़ी अजीब बात है कि तुम्हारा कटोरा टूट गया है और तुम खुश हो रहे हो।'' आपको समझ आई इसका क्या मतलब है?

एक प्रेमी: *नहीं! पूरी तरह समझ नहीं आई?*

महाराज जी: जो लोग ईमानदारी से किसी वस्तु को पाने की चाहत न लेकर परमात्मा के दरवाजे पर बैठते हैं उनके लिए कोई कमी नहीं रहती। वहाँ आपको सांसारिक वस्तुएं मिलेंगी और खुद परमात्मा भी मिलेगा लेकिन आपकी निगाह में कोई **निश्चित मकसद** होना चाहिए। जैसे कि बाकी के लोग लैला के पास दुनिया की वस्तुएं लेने गए थे लेकिन मजनूं वहाँ सांसारिक वस्तुएं माँगने के लिए नहीं लैला के लिए गया था।

लैला ने मजनूं का कटोरा तोड़कर कहा, ''जो तू चाहता है वह इस कटोरे में नहीं आ सकता।'' आप परमात्मा के दरवाजे पर किसी **निश्चित मकसद** को लेकर बैठें। आप वहाँ अकेले जाएं संसार की अच्छाईयों–बुराईयों, बच्चों, मित्रों को साथ न घसीटें। वह अकेला है और वह चाहता है कि आप अकेले आएं, यहाँ तक कि अपनी देह और बुद्धि को भी साथ लेकर न जाएं। इसमें क्या कीमत लगती है, क्या यह आसान नहीं?

आपने Prayer नाम की किताब पढ़ी होगी जिसमें यह लिखा है कि हम लोग केवल पक्षी की दृष्टि से देख रहे हैं, हम जुगाली कर रहे हैं। हम केवल ऊपर से पढ़ते हैं। उसके दरवाजे पर कोई कमी नहीं वह आपको इस संसार की और अगले संसार की भी वस्तुएं दे सकता है, वह आपको अपना आप भी दे सकता है। जब आप किसी **निश्चित मकसद** को ध्यान में रखकर बैठें तो आपकी चाहत निश्चित होनी चाहिए। अक्सर हम लोग बैठते हैं लेकिन हम यह नहीं जानते कि हमें क्या चाहिए?

मैंने एक बच्चे के बारे में पढ़ा था, उसका नाम वहिट्रिंगटन था। वह बच्चा लंदन का मेयर बनने के ख्याल को मजबूत करता था। वहिट्रिंगटन,

वहिट्ंिगटन लंदन का मेयर। तब वह महज एक बच्चा था और एक दिन आया जब वह लंदन का मेयर बना।

आपके आगे एक **निश्चित मकसद** होना चाहिए, आप दिशाहीन न हों। हम कभी यह वस्तु चाहते हैं कभी वह वस्तु चाहते हैं। आप कभी कहते हैं, ''संसार पहले परमात्मा बाद में।'' कभी कहते हैं, ''ओह! परमात्मा पहले संसार बाद में।'' हमेशा दुविधा बनी रहती है। प्रार्थना निश्चित होनी चाहिए कि आप किससे बात कर रहे हैं। आपको उसकी काबलियत पर भी विश्वास होना चाहिए और आपको जो चाहिए उस पर भी आपका एक मन होना चाहिए। उसके लिए सब कुछ संभव है आपको दोनों जहान की वस्तुएं मिल सकती हैं।

सन्त अक्सर इस जहान की नहीं दूसरे जहान की वस्तुएं भी देने के लिए आते हैं। वे आपको इस जहान की वस्तुएं भी दे सकते हैं, अगर कोई कमी है तो वह हमारे अंदर है। अपने **निश्चित मकसद** पर आएं और भजन में बैठें। आपको कभी यह चाहिए कभी वह चाहिए, फिर क्या होगा?

मैं किताबें पढ़ने का बहुत शौकीन था। पढ़ाई पूरी हो जाने के बाद मेरी महत्वाकांक्षा थी कि मुझे एक बहुत बड़ा पुस्तकालय चाहिए लेकिन मुझे फैसला करना था कि मुझे क्या करना चाहिए? अपनी सांसारिक महत्त्वाकांक्षा के पीछे जाना है या परमात्मा को पहले रखना है। यह फैसला करने में मुझे दस दिन लग गए। इस बात का फैसला करने के लिए मैं दफ्तर से शाम को बियाबान इलाके में जाता और कभी–कभी रात को एक–दो बजे तक अपने आपसे इस मुद्दे पर चर्चा करता।

आखिर मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि परमात्मा पहले और दुनिया उसके बाद। अगर आपके सामने कोई **निश्चित मकसद** है तो हर कदम आपको आपके मकसद के नजदीक लाता है। कभी हम दो फुट गहरा खड्डा खोदते हैं पानी नहीं मिलता, कभी तीन फुट गहरा खड्डा खोदते हैं फिर उस

जगह को छोड़कर दूसरी जगह खड्डा खोदते हैं फिर भी पानी नहीं मिलता। अगर आप एक ही जगह पर खड्डा खोदते जाएंगे पानी नीचे है, आपको पानी मिल जाएगा। आपके दिमाग में कोई ठोस मकसद होना चाहिए।

जब मैं तीसरी कक्षा में था तो अमेरिका के बारे में सोचा करता था। मकसद की अटलता और उसे प्राप्त करने के लिए धीरज होना चाहिए और उसके लिए ब्रह्मचर्य का जीवन होना चाहिए। मैं आपको अपना तजुर्बा बता रहा हूँ मुझसे जो भी प्रश्न पूछे जाते हैं मैं उनसे गुजरा हुआ हूँ।

आप किसी **निश्चित मकसद** को हासिल करना चाहते हैं तो उसके लिए दिन–रात मेहनत करें। अगर आप पहलवान बनना चाहते हैं तो उसके लिए मेहनत करें आप पहलवान बन जाएंगे। सारा संसार आपको जान जाएगा। जैसा कि आप जानते हैं कि आपका पिता स्वर्ग में परिपूर्ण है, आप उतने ही परिपूर्ण बनें।

हमारे सतसंगों में इस तरह की बातें होनी चाहिए जो लोगों को जागृत करें बेशक वे पहली बार ही सतसंग में क्यों न आए हों। हर एक को कुछ न कुछ मिलेगा। जो लोग खोज कर रहे हैं कि भजन कैसे करें, रूहानियत को कैसे प्राप्त करें, पाँचों मंडलों पर कैसे पहुँचें? सिर्फ दोहराने से आप रास्ते पर नहीं पहुँचेंगे। हम बातें तो करते हैं लेकिन अमली तौर पर उनका पालन नहीं करते।

हम सब अभ्यास किसलिए करते हैं? अभ्यास करने के लिए नहीं बल्कि अपने आपको जानने के लिए अभ्यास करते हैं। जब आप देह से ऊपर उठ जाते हैं तो आप देखते हैं कि आप देह नहीं। यहाँ आकर हम झिझक जाते हैं इसलिए हम उस पार नहीं जाते। हम कभी इस संसार के बारे में सोचते हैं कभी उस संसार के बारे में सोचते हैं। हम दरवाजे के उस पार देखकर कहते हैं कि यहाँ बहुत सुहावना है। हम जिससे बात करना चाहते हैं उसकी काबलियत के बारे में पूरे विश्वास के साथ बैठें।

क्राईस्ट ने कहा था, ''अगर आप परमात्मा से माँगेंगे तो वह दे या न दे क्योंकि आपको यकीन नहीं है कि आप किससे बात कर रहे हैं? अगर आप मेरे नाम से माँगेंगे तो शायद! वह आपको दे दे। अगर आप मुझसे माँगेंगे तो आपको वह अवश्य मिलेगा।'' इस ब्यान के पीछे क्या मकसद है? अगर आपका सतगुरु में पूरा विश्वास है तो वह आपको देगा, उसके पास सब वस्तुएं हैं, आपमें आत्मविश्वास होना चाहिए।

एक औरत जब ठीक हो गई तो वह ईसा के पास आई और ईसा ने कहा, ''तुम्हारे विश्वास ने तुम्हें ठीक कर दिया।'' वह जिसके पास आई थी उसकी काबलियत पर उसे पूरा विश्वास था। जिन लोगों ने गुरु को जिस्मानी तौर पर भी नहीं देखा होता लेकिन उन्हें अपने ऊपर, किसी ताकत–परमात्मा के काम करने का पूरा यकीन होता है। वे प्रार्थना करते हैं, ''हे परमात्मा! मैं नहीं जानता कि तू कहाँ है लेकिन तू मेरे लिए प्रकट हो।'' वह उसी स्वरूप में आपके लिए प्रकट होगा, जिस स्वरूप में वह काम कर रहा है।

मेरी किस्मत में भी ऐसा ही हुआ। मैंने हमेशा परमात्मा से प्रार्थना की कि मैं आपसे मिलना चाहता हूँ। संसार बहुत से गुरु–महात्माओं से भरा हुआ है मैं किसके पास जाऊँ? मुझे डर है अगर मैं किसी ऐसे के पास पहुँच गया जो तेरे तक न पहुँचा हो तो मेरे जीवन का उद्देश्य बर्बाद हो जाएगा। मुझे बहुत विश्वास था और मैं निश्चित था। क्या आप मुझे सीधे दर्शन दे सकते हैं? फिर वह मेरे अंदर सतगुरु रूप में प्रकट हुए।

मैंने आपके बारे में कभी नहीं सुना था। जिस्मानी तौर पर आपके मिलने से सात वर्ष पहले यह हुआ कि मैंने उन्हें गुरु नानक समझा। मैं एक कवि था मैंने पंजाबी, अंग्रेजी में कई कविताएं लिखी। एक दिन जब मैं ब्यास नदी पर गया तो मैंने उन्हें पा लिया। मैं आपसे कहूँगा अगर आपको यह भी पता न हो कि कहाँ जाना है फिर भी आप अपने आगे कोई पक्का

इरादा रखें कि कहाँ जाना है। हम दिशाहीन हैं परमात्मा बेफिक्र नहीं अगर हम इस तरह के ख्याल से भजन में बैठेंगे तो ज्यादा तरक्की करेंगे।

बहुत से मामलों में ऐसा होता है कि कई अपने आपको महात्मा कहलवाते हैं। अपनी खोज के शुरू में मैं भी एक सन्त के पास गया। मैंने उनसे कहा कि मुझे परमात्मा का नशा चढ़ा हुआ है। कभी–कभी वह नशा महीनों तक रहता है लेकिन जब ये नशा हफ्ते–दो हफ्ते के लिए टूट जाता है तो मेरी अवस्था बहुत असहनीय हो जाती है। मुझे क्या करना चाहिए? उस सन्त ने कहा, ''तुम्हें अपने आपको मेरे हवाले करना होगा।'' मैंने सोचा कि यह कौन है जो मेरे बारे में इतना चिन्तित है। मुझे उन पर विश्वास नहीं हुआ और मैंने उन्हें छोड़ दिया।

मैं वैसी ही प्रार्थना करता रहा। परमात्मा आपके मन की विचारधारा को जानता है, आप अपने आगे एक निश्चित पक्का विश्वास रखें; आप जल्दी तरक्की कर सकेंगे।

जब इंसान में परमात्मा की ताकत लबालब भर जाती है तो संसार में हर कोई उसे जानने लग जाता है। किंगकोंग एक पहलवान था, वह दूसरे पहलवान दारा के साथ कुश्ती करने के लिए आया। मैं वहाँ जज था, मैंने उन्हें ईनाम दिए। एक मुकाबले में किंगकोंग जीता और दूसरे में दारा जीता। जब मैंने दोनों को ईनाम दिए उस समय तस्वीरें खींची गई मेरे एक तरफ दारा बैठा है और दूसरी तरफ किंगकोंग बैठा है। आप जब उन तस्वीरों को देखेंगे उन तस्वीरों में मैं दोनों से ज्यादा ताकतवर लग रहा हूँ।

परमात्मा के लिए कुछ करें। मैं यह नहीं कहता कि आप दुनिया के पीछे न भागें। दुनिया को पता होना चाहिए कि आप कौन हैं? क्या आप किसी के मित्र भी साबित हुए हैं? जो वक्त पर काम आए वही सच्चा मित्र है। क्या हम केवल अपने आपके मित्र हैं? आमतौर पर हम सोचते हैं कि हमारे लिए क्या फायदेमंद है? शायद ही हम कभी सेवक बने हों।

हर वस्तु में परिपूर्ण ही परमात्मा है। स्वर्ग में अपने पिता परमात्मा की तरह परिपूर्ण बनें। गुरु साहब ने कहा है, ''जो खुद पूर्ण नहीं वह आपको कैसे संपूर्ण बना देगा।'' कुछ बनने की कोशिश करें। अपने सामने **निश्चित मकसद** रखकर मेहनत करें।

मैं जब संसार में दाखिल हुआ तो मेरी महत्त्वाकाक्षांए थी। एक अमीर आदमी ने मुझे बहुत सारे मकान और एक–दो पुस्तकालय देने की पेशकश की लेकिन मैंने तय किया कि परमात्मा पहले और संसार बाद में। मेरे ख्याल से मैं समर्पित हूँ। आप देखें! मैं अब किताबें लिखता हूँ आप जो भी यहाँ रिकार्ड कर रहे हैं ये किताबों में छपेगा।

अपने उद्देश्य को अपने सामने रखें। जब एक बार तय कर लिया तो उसे प्राप्त करने के लिए काम करें। अगर आप कछुए की तरह रोजाना थोड़ा–थोड़ा भी करेंगे तो अपने लक्ष्य पर पहुँच जाएंगे। हम खरगोश की तरह दौड़ रहे हैं थोड़ा कूदते हैं फिर सो जाते हैं। जो नियमित हैं वे आपसे पहले मंजिल पर पहुँच जाएंगे। पाप में गिरना इंसानी स्वभाव है लेकिन उसी में पड़े रहना हैवानियत है।

आपके आगे तय करने वाला रास्ता अभी पड़ा हुआ है। शायद! आप रास्ते में गिर जाएं फिर से उठें और तब तक न रूकें जब तक मंजिल पर न पहुँच जाएं। पहले जो भी सन्त आए हैं उन्होंने अपनी भाषा में कहा है लेकिन अंदाज–ए–बयान अलग था, उन्होंने बुनियादी बातें सिखाई।

कृपया तय करें, रोजाना अपने सामने **निश्चित मकसद** के लिए काम करें। आपको जो हिदायतें मिली हैं और आप जिसके आगे प्रार्थना कर रहे हैं उसकी काबलियत में विश्वास करते हुए धीरज और पवित्रता के साथ आगे बढ़ें। मेरे ख्याल से इतना ही काफी है। आपका धन्यवाद। आज का यह प्रश्न अच्छा था। ***

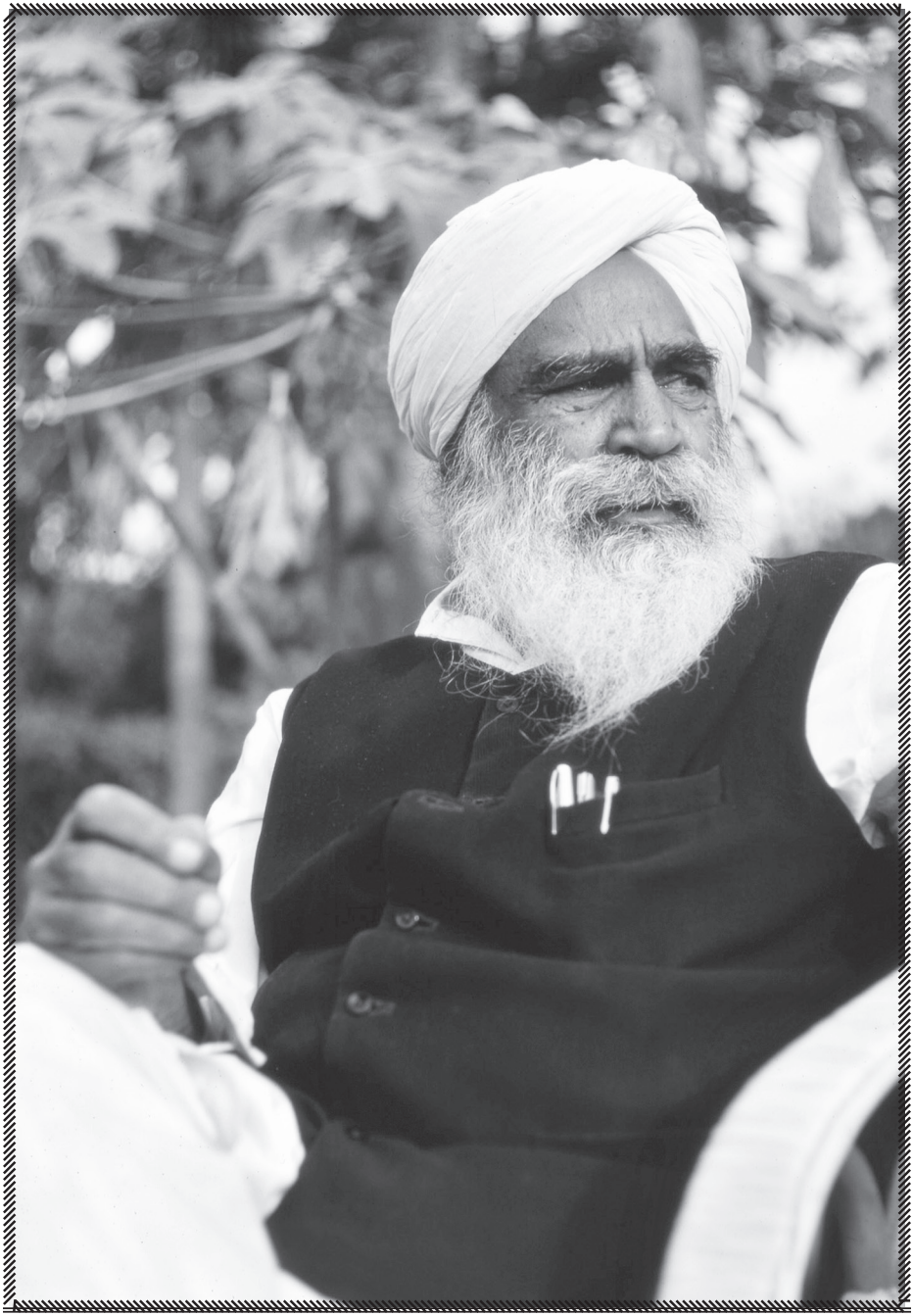

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से...

सच्चा उपदेश

चाहे किसी विवाह का कार्यक्रम हो चाहे क्रियाक्रम का कार्यक्रम हो आप अपने संपर्क में आए लोगों को यही समझाते कि हमने एक दिन यह शरीर छोड़ना है। चाहे हम इसके लिए तैयार हैं या नहीं तो फिर क्यों न इस अनमोल मौके का फायदा उठाएं और वह करें जो इंसानी जामें के अलावा और किसी जामें में नहीं किया जा सकता। क्यों न हम जरूरतमंदो और दुखियों की मदद करें?

किसी को कुछ देने से हम कुछ खोते नहीं। सच तो यह है कि हम परमपिता परमात्मा से उसके बदले में कई गुना ज्यादा पाते हैं। हम सब परमात्मा के बच्चे हैं। ऐसा करके हम अपने पिता की सच्ची रचना के साथ प्रेम कर रहे हैं। जिस हद तक मुमकिन हो अपनी दौलत और ज्ञान दूसरों के साथ बाँटें। आपके लिए दिन–रात, सुबह–शाम, दूर–नजदीक, पढ़ा–लिखा, दोस्त–दुश्मन, औरत–मर्द का कोई फर्क नहीं होना चाहिए। आप हर समय सबकी मदद के लिए तैयार रहें। आप हमेशा अपनी सारी संपत्ति बाँटने के लिए तैयार रहें क्योंकि ऐसा करके आप अपने परमपिता की सच्ची रचना से प्रेम कर रहे हैं। चाहे हम किसी भी रूप में किसी की मदद करें हमें ईनाम की इच्छा नहीं रखनी चाहिए।

दुनिया का अपना तरीका है। अक्सर लोग ज्यादातर उनकी मदद के लिए तैयार रहते हैं जो पहले से ही अमीर हैं। आप जरूरतमंदों की मदद करें और ख्याल रखें कि आप जिसकी मदद कर रहे हैं उसमें यह भावना नहीं आनी चाहिए कि मुझे कोई दे रहा है।

एक बार एक अखबार का रिर्पोटर आपसे मिलने सावन आश्रम आया। रिर्पोटर की यह सोच थी कि आप बहुत खर्चीला जीवन जीते हैं। आपने

उसकी तरफ ध्यान देकर कहा कि मैं बहुत साधारण तरीके का जीवन जीता हूँ। हो सकता है आपका खर्च मुझसे ज्यादा हो! आप आस-पास जो व्यवस्था देख रहे हैं यह बाहर से आने वाले लोगों के लिए है जिन्हें मैं सुखी देखना चाहता हूँ।

सन् 1946 में एक त्यागी साधु लाहौर में आपके घर आया। उस समय आपकी पत्नी मायके गई हुई थी और आप घर पर अकेले थे। आपने साधु से पूछा कि आप रात के खाने में क्या लेंगे? साधु ने जवाब दिया, ''मैं परमात्मा की रजा में खुश हूँ और मुझे कुछ नहीं चाहिए।'' आपको भी कुछ नहीं चाहिए था। ऐसा कहने के बाद दोनों ने आपस में कई धार्मिक तत्वों पर विचार किया। वह साधु उसी कमरे में सो गया। आप तीन घंटे तक कुछ लिखते रहे उसके बाद आप सो गए और सुबह जल्दी उठकर अभ्यास में बैठ गए।

अगले दिन सुबह आपने उस साधु से पूछा कि उसे नाश्ते में क्या चाहिए? साधु ने वही बात दोहराई जो उसने पहले दोहराई थी। आपने साधु से कुछ देर बात की और आफिस चले गए। साधु ने कहा कि वह शाम को फिर आएगा। शाम को फिर वही बात हुई दोनो ने खाना नहीं खाया। अगली सुबह फिर यही हुआ। आप आफिस चले गए, साधु कहीं और चला गया और शाम को वापिस लौट आया।

तीसरे दिन जब आप अपने घर आए तो साधु पहले से ही आया हुआ था तब आपने साधु से खाने के लिए पूछा तो साधु ने थकी आवाज में कहा कि आपको कुछ चाहिए या नहीं लेकिन मुझे जरूर कुछ खाने के चाहिए क्योंकि और भूख को सहन करना मेरे बस का नहीं है। मुझे पता नहीं कि आप किस चीज के बने हैं बिना कुछ खाए सारा दिन आफिस में काम करते हैं बाकी समय अभ्यास में लगाते हैं।

साधु ने कहा मुझे लगा शायद आप आफिस में खाना खाते होंगे लेकिन आज मैं आपके आफिस गया था तो मुझे पता लगा कि आप हमेशा की तरह पानी के अलावा कुछ नहीं लेते। आप इतना लम्बे समय बिना खाना खाए कैसे रहते हैं? यह मेरे लिए कठिन परीक्षा थी। मैं आपको प्रभावित करने के लिए भूखा रहा। आप साधु के लिए खाना लाए और कहा, ''नाम पावर ही सबसे बड़ा खाना है।'' वह साधु आपसे बहुत प्रभावित हुआ और उसने आपसे माफी माँगी।

लाहौर की रहने वाली एक बुजुर्ग माता बहुत अच्छी अभ्यासी थी, उसे आपके साथ बहुत लगाव था। वह माता अपने घर से बहुत लम्बा रास्ता तय करके आपसे मिलने जाती। अगर वह कई दिनों तक मिलने न जा पाती तो वह आपकी याद में अभ्यास में बैठ जाती और आप अपने आप उससे मिलने आ जाते।

एक बार ऐसा हुआ कि वह माता कुछ दुनियावी कामों से निराश होकर उदास मन से अभ्यास में बैठ गई। उस समय दोपहर का समय था आप अपने आफिस से साईकिल चलाकर गर्मी में उस माता से मिलने गए और आपने कहा, ''अभ्यास में बैठकर याद करने से पहले समय और हालात का जायजा ले लिया करें।''

एक बार आप अमृतसर टूर पर गए। आपने पंजाब में कुछ जगह जाने के बाद उत्तर प्रदेश में भी कई जगह जाना था। अमृतसर पहुँचने पर आपको अचानक अपना कार्यक्रम बदलना पड़ा क्योंकि एक प्रेमी अभ्यास में बैठकर लगातार आपको याद कर रहा था इसलिए आपको उसके पास जाना पड़ा। गुरु जानता है कि प्रेम की आग कहाँ जल रही है। गुरु अपने तय कार्यक्रम और अपने आराम की परवाह किए बिना अपने शिष्य के पास पहुँचता है।

बहुत बड़े राजनीतिज्ञ और सामाजिक लोग जो भी आपके संपर्क में आए वे आपका प्रभाव महसूस किए बिना नहीं रह सके। आपने औरत–मर्द, लड़का–लड़की, गरीब–अमीर, छोटे–बड़े सबको एक समान प्यार दिया। जो लोग आपको मारना चाहते थे आपने उन्हें भी वही प्यार दिया क्योंकि आप प्यार ही देना जानते थे।

अप्रैल 1974 हरिद्वार में कुंभ मेले के अवसर पर आपने सभी धर्मों के मुखियाओं की सभा आयोजित की। इस मौके पर हिन्दु धर्म के एक मंडलेश्वर ने व्याख्या की कि वेदों, पुराणों, शास्त्रों और धर्मपुस्तकों में जो लिखा है वह बहुत सराहनीय है। आपने उसकी पीठ थपथपाकर पूछा क्या यह आपका अपना अनुभव है? उसने कहा, ''इसमें मेरा अपना कोई अनुभव नहीं यह सब सिद्धान्तों और किताबों का ज्ञान है।'' आपने उस महानुभाव की तारीफ की कि उसने इतने सारे धार्मिक लीडरों के सामने सच मानने की ईमानदारी दिखाई।

आप अक्सर यही सलाह दिया करते थे कि जिन्होंने इस इंसानी जामें की प्रयोगशाला में सच को प्रत्यक्ष नहीं देखा उन पर भरोसा न करें। जिन्होंने खुद परमात्मा को नहीं देखा वे दूसरों को किस तरह परमात्मा दिखा सकते हैं? ***

सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

अमृतवेला

परमपिता परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने गरीब आत्मा पर रहम करके अपनी भक्ति का दान दिया। हम भक्ति को खेतो में उगा नहीं सकते, हुकूमत से खरीद नहीं सकते। हम भक्ति को सिर्फ गुरु की दया से ही प्राप्त कर सकते हैं। भक्ति अमोलक हीरा है, उत्तम पदार्थ है। अभी प्रेमी ने बहुत दर्द भरा शब्द बोला है:

मैं मेरी हटौणी पैंदी ऐ, भेटां सिर दी चढ़ौणी पैंदी ऐ।

जो प्रेम कमाना चाहता है, भक्ति कमाना चाहता है उसके लिए कम से कम फीस सिर कटवाने की है। प्यारेयो! हमने कोई दुनियावी सिर काटकर गुरु के आगे नहीं रखना और न ही गुरु हमारे सिर का भूखा है।

जब हम अपने फैले ख्याल को सिमरन के जरिए दोनों आँखों के पीछे एकाग्र करते हैं स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीनों पर्दे उतारकर तीसरे तिल पर एकाग्र हो जाते हैं तब हमारा इस शरीर के साथ ताल्लुक नहीं रहता। सन्त इसे ही सिर कटवाना या सिर भेंट करना कहते हैं। कोई मर–जीवणां प्रेमी ही ऐसा कर सकता है। बातें करनी तो बहुत आसान है।

जो प्रेमी सिमरन और भजन–अभ्यास करते हैं उन्हें पता है कि मन के साथ कितना संघर्ष करना पड़ता है। थोड़े से संघर्ष से ख्याल तीसरे तिल पर इकट्ठा नहीं होता। जब सिमरन करके तीसरे तिल पर पहुँच जाते हैं तो मन फिर भाग जाता है; कोई मर–जीवणां ही मन के साथ संघर्ष करके जीतता है।

प्यारेयो! प्रेमियों के साथ मिलने पर ही पता लगता है वे जब आकर कहते हैं कि मुझे मन ने गिरा लिया। एक गलती ही जिंदगी को खुष्क कर देती है। जब हम छह महीने या साल भर गलतियाँ करते हैं तो हम किस

तरह तीसरे तिल पर एकाग्र हो सकते हैं? अगर जनरल मैदान–ए–जंग में जाते हुए यह कहे कि मेरे साथ लड़ने वाले विरोधियों के हथियार अच्छे हैं तो क्या हम ऐसे जनरल से फतह की आशा रख सकते हैं, क्या वह देश का वफादार हो सकता है?

इसी तरह अगर शिष्य यह कहे कि विरोधी ताकतें काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार बहुत मजबूत हैं अगर ये ताकतें न हों तो मैं फतह पा सकता हूँ। हम रोज–रोज कीचड़ में फँसते हैं तो क्या हम सिर को भेंट चढ़ाने की आशा कर सकते हैं?

प्यारेयो! हमारा मैदान–ए–जंग तीसरा तिल है। सतगुरु ने हमें शब्द–धुन के साथ लेस किया है। सतगुरु कभी यह नहीं कहता कि तू अकेला जा बल्कि वह हमेशा हमारे साथ है लेकिन लड़ना तो जनरल का ही काम होता है। शिष्य ने आगे मजबूत होकर खड़े होना है, गुरु उसकी पीठ पर है। एक जनरल मैदान–ए–जंग में अपने मालिक का हुक्म मानकर जाता है तो उसकी जरूरत का सामान पहुँचाना हैडक्वाटर वालों का काम होता है।

प्यारे बच्चो! गुरु सिर्फ देह नहीं होता वह हमें सिर्फ पाँच अक्षर ही नहीं बताता। जब वह देह में बैठा है तो हमारे अंदर उत्साह और तड़प पैदा करता है। हमारे खतरनाक दुश्मन हमारी रूहानी पूँजी लूटते हैं, गुरु हमें उनसे सावधान करता है। जब हम गुरु की शिक्षा पर पूरी तरह अमल करके तीसरे तिल पर जाते हैं सूक्ष्म देश में जाते हैं तो वह सूक्ष्म रूप धारण करता है। जब हम कारण देश में जाते हैं तो वह कारण रूप धारण करता है, जब हम पारब्रह्म में जाते हैं तो वह सार शब्द है।

जिस तरह हम अंदर तरक्की करते जाते हैं सतगुरु वही स्वरूप धारण करके हमारी मदद करता है, वह हर वक्त हमारे साथ है। सच तो यह है कि वह परछाई की तरह अंदर एक सैकिंड भी सेवक से दूर नहीं होता। आँखें बंद करके अपना सिमरन शुरु करें। ***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से...

सन्त कल्लरपट्ट

यह साखी सन्त कल्लरपट्ट की है। सन्त कल्लरपट्ट रियासत पटियाला में झूठा गुरु बनकर लोगों को लूटकर खाता था। जब कल्लपट्ट का अन्त समय आया तो वह प्रेत बना। किसी मांदरी ने उसे चीरकर मौहमदी के शरीर में प्रवेश कर दिया। कल्लरपट्ट काफी समय मौहमदी के शरीर में रहकर उसे दु:ख देता रहा।

कुछ समय बीत जाने के बाद मौहमदी को सतगुरु कृपाल सिंह जी की सोहबत मिली। मौहमदी ने 'नामदान' प्राप्त किया और अपना सारा दु:ख बयान किया कि मुझे अंदर ही कोई चीज खाए जा रही है।

परमपिता कृपाल ने दया करके उसे सारा हाल बताया कि जो आदमी किसी भी आडंबर के जरिए लोगों को लूटकर खाता है या लोगों से अपना आदर–मान करवाता है, काल उसे नर्कों में डालकर दु:ख देता है। जो कल्लरपट्ट मौहमदी के शरीर में था हुजूर के ये वचन सुनकर वह पिछले समय की बातें करने लगा कि मुझे दुनिया बहुत मानती थी। जब लोग मुझे गुरु जी कहते थे तो मुझे बहुत खुशी होती थी। झूठा गुरु बनकर मुझसे जो गलतियाँ हुई वे मुझे अब समझ आई हैं। मैं खुद मुक्त नहीं हुआ और अब प्रेत बनकर लोगों को दु:ख दे रहा हूँ।

कल्लरपट्ट मौहमदी के शरीर में बोल रहा था कि यमदूत ने पकड़कर मुझे धर्मराज के दरबार में पेश कर दिया। धर्मराज ने हुक्म दिया, ''उस तरफ नर्क में एक गंदा छप्पड़ है, वहाँ पहले भी एक झूठा गुरु है। इसके हाथ–पैर बाँधकर वहाँ फैंक दो। इसने मातलोक में जादू के जरिए लोगों को लूट–लूटकर खाया है, लोगों को अपना सेवक बनाया है इसलिए इसकी गति नहीं हुई और न ही इसके सेवकों की गति हुई है। अब इसके सेवक साँप बनकर इसका माँस नोच–नोचकर खाएंगे और इससे हिसाब लेंगे।''

सन्त कल्लरपट्ट मौहमदी के शरीर में चीखें मारकर कह रहा था, ''सतगुरु जी! आप मुझे बख्श दें। मैं आपसे माफी माँगता हूँ। अगर आपके दर पर आकर भी मैं प्रेत बना रहा तो मुझे कौन बख्शेगा? मुझ पर दया करके मुझे इस गंदी योनि से छुड़वाएं।''

सन्त बेइंसाफ नहीं होते। सन्तों के दरबार में दया है। हुजूर ने दया करके उसे प्रशाद दिया। मौहमदी ने प्रशाद खाया और कल्लरपट्ट की प्रेत योनि से छूट गया। ***

कृपाल गुरु आजा संगत पुकार दी

कृपाल गुरु आजा, संगत पुकार दी,
तेरे हथ विच चाबी ओ दाता, सारे संसार दी (2)

1. संगत पुकार दी है, दोवें हथ जोड़ के,
कित्थे चले गयों दाता, संगत नूं छोड़ के (2)
देंदा रह दिखाली सदा, मेरी ऐह पुकार जी
तेरे हथ विच चाबी.....

2. संगत दे वालिया, देर ना लगावीं वे,
सुणके आवाज साडी, छेती–छेती आवीं वे, (2)
दर्शनां नूं बैठी, संगत तैयार जी,
तेरे हथ विच चाबी.....

3. संगत दा वैद्य, तेर हथ च दवाई वे,
ताला किसे होर लाया, तैं चाबी लाई वे, (2)
जोगे नूं बचाया बण, आप पहरेदार जी,
तेरे हथ विच चाबी.....

4. नानकी पुकारेया, तू झट विच आया सी,
पुकार वाला फुल्का, प्यार नाल खाया सी, (2)
ओसे तरहां आजा तूं, मैंनूं ना विसार जी,
तेरे हथ विच चाबी.....

5. सुणदा पुकार दाता, मुढ तों तूं आया वे,
मक्खण लुभाणे दा, जहाज बन्ने लाया वे, (2)
संगत नूं बचा लै, ऐह पुकार 'अजायब' साध दी,
तेरे हथ विच चाबी.....

धन्य अजायब

16 पी. एस. रायसिंह नगर आश्रम में सतसंग के कार्यक्रम

06 से 12 सितम्बर 2020

02 से 04 अक्टूबर 2020

30, 31 अक्टूबर व 01 नवम्बर 2020

04, 05 व 06 दिसम्बर 2020